MPSE 004

SOCIAL AND POLITICAL THOUGHT IN MODERN INDIA

LIVE REVISION CLASS 01

MUST WATCH VIDEO BEFORE EXAM

Scholarly Minds

Examine Dr. B. R. Ambedkar's views on caste system and its annihilation.

जाति व्यवस्था और उसके विनाश पर डॉक्टर बी आर अंबेडकर के विचारों की जांच कीजिए।

- **Criticism of the Caste System**

Dr. B.R. Ambedkar was highly critical of the caste system, which he viewed as a tool for the oppression and exploitation of lower castes, particularly Dalits. He believed that the caste system was a major barrier to social equality and justice in India. According to him, it created divisions, inequality, and social discrimination that were deeply entrenched in Indian society.

जातिवाद व्यवस्था की आलोचना

डॉ. बी. आर. अंबेडकर जातिवाद व्यवस्था की कड़ी आलोचना करते थे, जिसे उन्होंने निचली जातियों, विशेष रूप से दलितों, के शोषण और उत्पीड़न का एक उपकरण माना। उनका मानना था कि जातिवाद सामाजिक समानता और न्याय के लिए एक बड़ी रुकावट था। उनके अनुसार, जातिवाद ने भारतीय समाज में भेदभाव, असमानता और सामाजिक विभाजन को जन्म दिया था।

- **Social and Political Equality**

Ambedkar strongly advocated for the social and political equality of all people, regardless of their caste. He argued that the caste system deprived lower castes of basic human rights, such as access to education, employment, and social justice. He demanded that all Indians should have equal rights and opportunities in society.

सामाजिक और राजनीतिक समानता

अंबेडकर सामाजिक और राजनीतिक समानता के सख्त समर्थक थे, चाहे व्यक्ति किसी भी जाति से हो। उनका कहना था कि जातिवाद निचली जातियों को बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित करता है, जैसे कि शिक्षा, रोजगार और सामाजिक न्याय। उन्होंने यह मांग की कि सभी भारतीयों को समाज में समान अधिकार और अवसर मिलें।

- **Annihilation of Caste**

Dr. Ambedkar believed that the caste system could not be reformed, and the only solution was its complete abolition. He argued that caste was not just a social issue but a deeply ingrained part of religion, particularly in Hinduism. He proposed the annihilation of caste

through social, legal, and religious reforms, and he called for the establishment of a society based on equality, justice, and fraternity.

जातिवाद का उन्मूलन

डॉ. अंबेडकर का मानना था कि जातिवाद को सुधारना संभव नहीं था, और इसका समाधान केवल इसका पूर्ण उन्मूलन था। उन्होंने कहा कि जातिवाद केवल एक सामाजिक समस्या नहीं थी, बल्कि यह धर्म, विशेष रूप से हिंदू धर्म, का एक गहरे तरीके से जुड़ा हुआ हिस्सा था। उन्होंने जातिवाद के उन्मूलन के लिए सामाजिक, कानूनी और धार्मिक सुधारों की वकालत की, और समानता, न्याय और भाईचारे पर आधारित एक समाज की स्थापना का आह्वान किया।

- **Conversion to Buddhism**

As a way to escape the oppression of the caste system, Dr. Ambedkar embraced Buddhism in 1956 along with millions of his followers. He believed that Buddhism provided a path for the annihilation of caste, as it rejected the hierarchical structure of Hinduism and promoted equality. He felt that Buddhism offered a more inclusive and egalitarian approach to spirituality.

बुद्ध धर्म की ओर रुझान

जातिवाद के उत्पीड़न से मुक्ति पाने के लिए, डॉ. अंबेडकर ने 1956 में अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म को अपनाया। उनका मानना था कि बौद्ध धर्म जातिवाद के उन्मूलन का एक रास्ता प्रदान करता है, क्योंकि यह हिंदू धर्म की श्रेणीबद्ध संरचना को अस्वीकार करता है और समानता को बढ़ावा देता है। उन्होंने महसूस किया कि बौद्ध धर्म आध्यात्मिकता के लिए एक अधिक समावेशी और समानतावादी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

- **Education as a Means for Emancipation**

Dr. Ambedkar believed that education was the key to the upliftment and emancipation of the lower castes. He emphasized the importance of education for Dalits and other marginalized communities, seeing it as a tool to break the chains of caste oppression. He advocated for higher education, particularly in law and social sciences, to equip people to challenge the caste system and fight for their rights.

मुक्ति के लिए शिक्षा का महत्व

डॉ. अंबेडकर का मानना था कि शिक्षा निचली जातियों के उत्थान और मुक्ति की कुंजी है। उन्होंने दलितों और अन्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए शिक्षा के महत्व पर जोर दिया, इसे जातिवाद उत्पीड़न की जंजीरों को तोड़ने का एक उपकरण माना। उन्होंने विशेष रूप से कानून और समाजशास्त्र में उच्च शिक्षा की वकालत की, ताकि लोग जातिवाद व्यवस्था को चुनौती दे सकें और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकें।

- **Legal Reforms and the Indian Constitution**

Ambedkar played a central role in the drafting of the Indian Constitution and worked to include provisions that would protect the rights of Dalits and other marginalized communities. He advocated for affirmative action policies, such as reservations in education and employment, to ensure that lower castes had equal opportunities for progress.

कानूनी सुधार और भारतीय संविधान

अंबेडकर भारतीय संविधान के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाई और उन्होंने ऐसे प्रावधानों को शामिल

Scholarly Minds

करने के लिए काम किया जो दलितों और अन्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की रक्षा करें। उन्होंने सकारात्मक भेदभाव नीति, जैसे कि शिक्षा और रोजगार में आरक्षण की वकालत की, ताकि निचली जातियों को प्रगति के समान अवसर मिल सकें।

Write an essay on Sir Syed Ahmed Khan's contribution to modern education for Muslims.

हिन्दू-मुसलमान एकता पर सर सैयद अहमद खान के विचारों का वर्णन कीजिए।

1. Establishment of Aligarh Muslim University (AMU)

Sir Syed Ahmed Khan is most famous for founding the *Muhammadan Anglo-Oriental College* in 1875, which later became the *Aligarh Muslim University (AMU)*. This institution played a pivotal role in providing modern education to Muslims, blending traditional Islamic education with Western scientific knowledge. AMU became a center for academic excellence and produced a generation of Muslim leaders, intellectuals, and professionals.

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना

सर सैयद अहमद खान को 1875 में *मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज* की स्थापना के लिए प्रसिद्ध किया जाता है, जो बाद में *अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU)* बन गया। यह संस्थान मुसलमानों को आधुनिक शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था, जो पारंपरिक इस्लामिक शिक्षा को पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान के साथ जोड़ता था। AMU अकादमिक उत्कृष्टता का केंद्र बन गया और इसने मुसलमानों के नेताओं, बौद्धिकों और पेशेवरों की एक पीढ़ी को तैयार किया।

2. Promotion of Western Education

Sir Syed advocated for the importance of Western-style education, including science, mathematics, and literature, for the Muslims of India. He recognized the need to modernize the education system to compete with the British and other Western powers. His emphasis on acquiring knowledge from both Eastern and Western traditions helped bridge the gap between Muslim students and the rapidly changing world.

पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा देना

सर सैयद ने भारत के मुसलमानों के लिए पश्चिमी शैली की शिक्षा, जिसमें विज्ञान, गणित और साहित्य शामिल हैं, के महत्व को बढ़ावा दिया। उन्होंने ब्रिटिश और अन्य पश्चिमी शक्तियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने की आवश्यकता को महसूस किया। उनकी इस्लामी और पश्चिमी परंपराओं से ज्ञान प्राप्त करने पर जोर देने से मुसलमान छात्रों और तेजी से बदलती दुनिया के बीच की खाई को पाटने में मदद मिली।

3. Introduction of Modern Textbooks

Sir Syed contributed to the development of modern textbooks in Urdu and English for Muslim students. He worked to adapt the traditional Islamic curriculum to include subjects that were relevant to contemporary society. This was an important step in making modern

Scholarly Minds

education accessible to Muslims, as it provided them with the tools to engage with modern scientific and technological developments.

आधुनिक पाठ्यपुस्तकों की शुरुआत
सर सैयद ने मुसलमान छात्रों के लिए उर्दू और अंग्रेजी में आधुनिक पाठ्यपुस्तकों के विकास में योगदान दिया। उन्होंने पारंपरिक इस्लामी पाठ्यक्रम को समकालीन समाज से संबंधित विषयों को शामिल करने के लिए अनुकूलित करने का काम किया। यह मुसलमानों के लिए आधुनिक शिक्षा को सुलभ बनाने में एक महत्वपूर्ण कदम था, क्योंकि इसने उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास से जुड़ने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान किए।

4. Reform of Muslim Society through Education

Sir Syed believed that education was the key to the progress and social upliftment of the Muslim community. He worked towards improving the social and educational status of Muslims by promoting modern education. His efforts included urging Muslims to send their children to schools that taught English and Western sciences, and he believed this would lead to better job opportunities and social mobility.

शिक्षा के माध्यम से मुस्लिम समाज में सुधार
सर सैयद का मानना था कि शिक्षा मुसलमान समुदाय की प्रगति और सामाजिक उत्थान की कुंजी है। उन्होंने आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देकर मुसलमानों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति में सुधार करने के लिए काम किया। उनके प्रयासों में मुसलमानों को अंग्रेजी और पश्चिमी विज्ञान पढ़ाने वाले स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने के लिए प्रेरित करना शामिल था, और उनका मानना था कि इससे बेहतर नौकरी के अवसर और सामाजिक गतिशीलता हासिल होगी।

5. Promotion of Urdu as a Modern Language

Sir Syed Ahmed Khan recognized the importance of Urdu as a language of culture and education. He worked towards its promotion as a modern medium of instruction alongside English. He believed that Urdu could be a unifying force for Muslims in India, enabling them to better integrate with the larger society while maintaining their cultural identity.

उर्दू को एक आधुनिक भाषा के रूप में बढ़ावा देना
सर सैयद अहमद खान ने उर्दू को संस्कृति और शिक्षा की भाषा के रूप में महत्व दिया। उन्होंने इसे अंग्रेजी के साथ-साथ शिक्षा का एक आधुनिक माध्यम बनाने के लिए काम किया। उनका मानना था कि उर्दू भारत में मुसलमानों के लिए एक एकजुट करने वाली शक्ति बन सकती है, जो उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए समाज के बड़े हिस्से से बेहतर तरीके से जुड़ने में सक्षम बनाएगी।

Describe Pandita Rama Bai's contribution to women's rise and reform.

नारी के उद्भव और सुधार के प्रति पंडिता रमाबाई के योगदान का वर्णन कीजिए।

1. Advocacy for Women's Education

Pandita Ramabai was a strong advocate for women's education, believing that education was the key to empowering women and improving their status in society. She worked towards providing education for girls, particularly in rural areas where educational opportunities were

Scholarly Minds

scarce. She promoted modern education that included both academic and vocational training, ensuring that women were equipped to be self-reliant.

महिलाओं की शिक्षा के लिए समर्थन

पंडिता रामाबाई महिलाओं की शिक्षा की प्रबल समर्थक थीं, और उनका मानना था कि शिक्षा महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके समाज में स्थान को सुधारने की कुंजी है। उन्होंने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करने की दिशा में काम किया, जहां शिक्षा की कमी थी। उन्होंने आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा दिया, जिसमें शैक्षिक और व्यावासिक प्रशिक्षण दोनों शामिल थे, ताकि महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें।

2. Reformation of Widowhood

Pandita Ramabai was a vocal critic of the social practices that oppressed widows, particularly the custom of child marriage and the harsh treatment of widows. She fought for the rights of widows, advocating for their right to remarry and to live dignified lives. She also played a key role in the widow remarriage movement in India, emphasizing the importance of reforming laws regarding widowhood.

विधवाओं के उत्थान के लिए काम

पंडिता रामाबाई विधवाओं के अधिकारों की सशक्त समर्थक थीं और विशेष रूप से बाल विवाह और विधवाओं के साथ कठोर व्यवहार के खिलाफ मुखर आलोचना की। उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह और सम्मानजनक जीवन जीने के अधिकार के लिए संघर्ष किया। इसके अलावा, उन्होंने भारत में विधवा पुनर्विवाह आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और विधवावस्था से संबंधित कानूनों में सुधार की आवश्यकता पर जोर दिया।

3. Social Reform through Literature

Ramabai used her writing as a powerful tool for social reform. She wrote extensively on women's rights and social justice. Her most famous work, *The High-Caste Hindu Woman*, highlighted the plight of Hindu women and advocated for their liberation from social oppression. Through her writings, she inspired both men and women to challenge traditional norms and fight for gender equality.

साहित्य के माध्यम से सामाजिक सुधार

रामाबाई ने सामाजिक सुधार के लिए अपने लेखन का उपयोग किया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक न्याय पर व्यापक रूप से लिखा। उनका सबसे प्रसिद्ध काम, *द हाइ-कास्ट हिंदू वुमन,* हिंदू महिलाओं की दुर्दशा को उजागर करता है और उनके सामाजिक उत्पीड़न से मुक्ति की बात करता है। अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने पुरुषों और महिलाओं दोनों को पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने और लिंग समानता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।

4. Establishment of the Mukti Mission

In 1889, Ramabai founded the *Mukti Mission* in Pune, which was a refuge for widows, orphans, and destitute women. The mission provided shelter, education, and vocational training to women who had been marginalized by society. This institution not only helped women lead independent lives but also empowered them by providing them with skills to contribute to society.

Scholarly Minds

मुक्ति मिशन की स्थापना

1889 में, रामाबाई ने पुणे में *मुक्ति मिशन* की स्थापना की, जो विधवाओं, अनाथों और निर्धन महिलाओं के लिए एक शरणस्थली थी। इस मिशन ने समाज द्वारा हाशिए पर डाली गई महिलाओं को शरण, शिक्षा, और व्यावासिक प्रशिक्षण प्रदान किया। इस संस्था ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद की और उन्हें समाज में योगदान देने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करके उन्हें सशक्त किया।

5. Pioneering the Women's Renaissance Movement

Pandita Ramabai was at the forefront of the women's renaissance movement in India, where she called for radical reforms to improve women's lives. She advocated for women's equality in all spheres of life, including education, employment, and social justice. Her efforts in this movement helped raise awareness about women's rights and contributed to the broader Indian social reform movement.

महिला पुनर्जागरण आंदोलन की अग्रणी

पंडिता रामाबाई भारत में महिला पुनर्जागरण आंदोलन के अग्रणी थीं, जहां उन्होंने महिलाओं के जीवन को सुधारने के लिए क्रांतिकारी सुधारों की मांग की। उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की समानता की बात की, जिसमें शिक्षा, रोजगार और सामाजिक न्याय शामिल थे। इस आंदोलन में उनके प्रयासों ने महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद की और व्यापक भारतीय सामाजिक सुधार आंदोलन में योगदान दिया।

Analyse Jawaharlal Nehru's views on Secularism.

धर्मनिरपेक्षता पर जवाहरलाल नेहरू के विचारों का विश्लेषण कीजिए।

1. **Separation of Religion from Politics**
   Jawaharlal Nehru believed in the separation of religion from politics. He felt that a modern state should not be influenced by religious beliefs or practices. For him, the government should be neutral towards all religions, treating all citizens equally regardless of their faith.

   ### राजनीति से धर्म का पृथक्करण
   जवाहरलाल नेहरू का मानना था कि धर्म और राजनीति को अलग किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि एक आधुनिक राज्य को धार्मिक विश्वासों या प्रथाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए। उनके लिए, सरकार को सभी धर्मों के प्रति निष्पक्ष होना चाहिए और सभी नागरिकों को उनके विश्वास के आधार पर समान रूप से देखना चाहिए।

2. **Religious Tolerance and Pluralism**
   Nehru emphasized the importance of religious tolerance. He believed that India should embrace its diverse religious and cultural identities. Secularism, for him, meant respecting all religions and fostering an environment where people of different faiths could live together peacefully.

   ### धार्मिक सहिष्णुता और बहुसंस्कृतिवाद
   नेहरू ने धार्मिक सहिष्णुता के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि भारत को अपनी

Scholarly Minds

विविध धार्मिक और सांस्कृतिक पहचानों को अपनाना चाहिए। उनके लिए, धर्मनिरपेक्षता का मतलब था सभी धर्मों का सम्मान करना और ऐसा वातावरण बनाना जहाँ विभिन्न विश्वासों के लोग शांति से साथ रह सकें।

3. **Secularism as a Core Principle of Indian Democracy**
   Nehru saw secularism as a fundamental part of India's democratic framework. He believed that for India to remain united and strong, it was essential to avoid religious divisions. Secularism, for him, was not just about religious freedom but also about national integration and unity.

   धर्मनिरपेक्षता को भारतीय लोकतंत्र के मूल सिद्धांत के रूप में देखना
   नेहरू धर्मनिरपेक्षता को भारतीय लोकतंत्र के ढांचे का एक बुनियादी हिस्सा मानते थे। उनका मानना था कि भारत को एकजुट और मजबूत बनाए रखने के लिए धार्मिक विभाजन से बचना जरूरी था। उनके लिए, धर्मनिरपेक्षता केवल धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता और सामूहिकता के बारे में भी थी।

4. **Equal Rights for All Religions**
   Nehru advocated for equal rights for people of all religions. He believed that no religion should receive special treatment from the state, and that all citizens should have equal opportunities regardless of their religious background.

   सभी धर्मों के लिए समान अधिकार
   नेहरू सभी धर्मों के लोगों के लिए समान अधिकारों का समर्थन करते थे। उनका मानना था कि किसी भी धर्म को राज्य से विशेष treatment नहीं मिलनी चाहिए और सभी नागरिकों को उनके धार्मिक पृष्ठभूमि के बावजूद समान अवसर मिलना चाहिए।

5. **Religious Identity vs National Identity**
   Nehru believed that religion should not define a person's national identity. He argued that people should be first and foremost citizens of the country, and their religion should be a private matter, not something that influences their role in society or politics.

   धार्मिक पहचान बनाम राष्ट्रीय पहचान
   नेहरू का मानना था कि धर्म को एक व्यक्ति की राष्ट्रीय पहचान नहीं बनानी चाहिए। उन्होंने तर्क किया कि लोग सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से देश के नागरिक होने चाहिए, और उनका धर्म एक निजी मामला होना चाहिए, जो उनके समाज या राजनीति में भूमिका को प्रभावित न करे।

6. **Secularism for Social Harmony**
   Nehru believed that secularism was necessary for social harmony in a diverse country like India. He argued that by keeping religion out of politics and governance, people from different religious communities could live together without conflict, fostering peace and unity.

   सामाजिक सद्भाव के लिए धर्मनिरपेक्षता
   नेहरू का मानना था कि भारत जैसे विविध देश में सामाजिक सद्भाव के लिए धर्मनिरपेक्षता जरूरी है। उन्होंने तर्क किया कि राजनीति और शासन से धर्म को बाहर रखकर, विभिन्न

Scholarly Minds

धार्मिक समुदायों के लोग बिना संघर्ष के साथ रह सकते हैं, जिससे शांति और एकता बनी रहती है।

7. **Nehru's Secularism and Minority Rights**
   Nehru's secularism also aimed at protecting the rights of minorities. He was committed to ensuring that minorities, particularly Muslims and other religious groups, were not discriminated against and had equal rights in a secular state.

   नेहरू की धर्मनिरपेक्षता और अल्पसंख्यकों के अधिकार
   नेहरू की धर्मनिरपेक्षता का उद्देश्य अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करना भी था। वह यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध थे कि अल्पसंख्यक, विशेष रूप से मुसलमान और अन्य धार्मिक समूह, भेदभाव का शिकार न हों और धर्मनिरपेक्ष राज्य में उन्हें समान अधिकार प्राप्त हों।

Examine M.A. Jinnah's contribution towards Muslim nationalism.

मुस्लिम राष्ट्रवाद के प्रति मोहम्मद अली जिन्ना के योगदान का परीक्षण कीजिए।

- **Protector of Muslim Rights**

Jinnah initially worked to protect the rights of Muslims in India. He wanted Muslims to have their fair share in politics and government, ensuring their voices were heard alongside other communities.

मुसलमानों के अधिकारों के रक्षक
जिन्ना ने शुरू में भारत में मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए काम किया। वह चाहते थे कि मुसलमानों को राजनीति और सरकार में समान रूप से प्रतिनिधित्व मिले, ताकि उनकी आवाज़ भी सुनी जा सके।

- **Two-Nation Theory**

Jinnah argued that Hindus and Muslims were two separate nations with different religions, cultures, and ways of life. He believed that both communities could not live together under one government, and Muslims needed their own state.

दो-राष्ट्र सिद्धांत
जिन्ना ने कहा कि हिंदू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र हैं, जिनकी धर्म, संस्कृति और जीवनशैली अलग हैं। उनका मानना था कि दोनों समुदाय एक साथ एक ही सरकार के तहत नहीं रह सकते और मुसलमानों को अपना अलग राज्य चाहिए।

- **Leader of the Muslim League**

Jinnah became the leader of the All India Muslim League in 1913. He turned it into the main political party for Muslims and fought for their rights. He made the League the voice of Muslim nationalism in India.

मुस्लिम लीग के नेता
जिन्ना 1913 में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग के नेता बने। उन्होंने इसे मुसलमानों का प्रमुख राजनीतिक दल बना दिया और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उन्होंने लीग को भारत में मुस्लिम राष्ट्रवाद की आवाज़ बना दिया।

Scholarly Minds

- **Demand for Pakistan**

Jinnah is most famous for demanding a separate country for Muslims, which eventually led to the creation of Pakistan in 1947. He believed that Muslims would be safer and have more freedom in their own country.

पाकिस्तान की मांग

जिन्ना पाकिस्तान के लिए अलग देश की मांग के लिए प्रसिद्ध हैं, जो अंततः 1947 में पाकिस्तान के रूप में बना। उनका मानना था कि मुसलमान अपने देश में सुरक्षित और स्वतंत्र रह सकते हैं।

- **Lucknow Pact (1916)**

Jinnah played an important role in the Lucknow Pact, which was an agreement between the Indian National Congress and the Muslim League. It helped bring Hindus and Muslims together to work for India's independence, showing that Jinnah believed in cooperation between the communities.

लखनऊ समझौता (1916)

जिन्ना ने लखनऊ समझौते में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच एक समझौता था। इसने हिंदू और मुसलमानों को एक साथ भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करने में मदद की, यह दिखाता है कि जिन्ना समुदायों के बीच सहयोग में विश्वास रखते थे।

- **Increased Communal Divide**

Later, Jinnah's call for a separate Muslim state deepened the divide between Hindus and Muslims. His demand for Pakistan and his focus on Muslim nationalism contributed to the tensions between the two communities, especially as India's independence approached.

सांप्रदायिक विभाजन में वृद्धि

बाद में, जिन्ना के अलग मुस्लिम राज्य की मांग ने हिंदू और मुसलमानों के बीच विभाजन को गहरा किया। पाकिस्तान की मांग और मुस्लिम राष्ट्रवाद पर उनका ध्यान भारत की स्वतंत्रता के करीब आते ही दोनों समुदायों के बीच तनाव का कारण बने।

- **Father of Pakistan**

Jinnah is often called the "Father of Pakistan" because of his role in creating the country. He is remembered as the leader who fought for Muslim rights and a separate Muslim state, which led to the creation of Pakistan in 1947.

पाकिस्तान के पिता

जिन्ना को अक्सर "पाकिस्तान के पिता" के रूप में जाना जाता है क्योंकि पाकिस्तान के निर्माण में उनकी भूमिका थी। उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने मुसलमानों के अधिकारों और एक अलग मुस्लिम राज्य के लिए संघर्ष किया, जिसके परि

Examine Rabindranath Tagore's critique of nationalism

रवीन्द्रनाथ टैगोर की राष्ट्रवाद की आलोचना का परीक्षण कीजिए।

- **Nationalism Creates Divisions**

Tagore criticized nationalism for dividing people. He believed that when people focus too

Scholarly Minds

much on nationalism, they start thinking one country is better than another. This leads to conflict and war. For him, nationalism could create hatred and rivalry instead of peace.

राष्ट्रवाद लोगों में विभाजन पैदा करता है

रवींद्रनाथ ठाकुर ने राष्ट्रवाद की आलोचना की क्योंकि इससे लोग आपस में बंट जाते हैं। उनका मानना था कि जब लोग राष्ट्रवाद पर ज्यादा ध्यान देते हैं, तो वे यह सोचने लगते हैं कि एक देश दूसरे से बेहतर है। इससे संघर्ष और युद्ध हो सकते हैं। उनके लिए, राष्ट्रवाद शांति की जगह घृणा और प्रतिस्पर्धा पैदा करता है।

- **Nationalism Limits Individual Freedom**

Tagore felt that nationalism can force people to give up their personal freedom and identity for the sake of the country. He argued that a person should be free to express themselves and not be bound by national pride or demands.

राष्ट्रवाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करता है

ठाकुर का मानना था कि राष्ट्रवाद लोगों को अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पहचान को देश के लिए बलि चढ़ाने के लिए मजबूर कर सकता है। उनका कहना था कि एक व्यक्ति को अपनी राय और पहचान व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए, और उसे राष्ट्र के गौरव या मांगों से बंधना नहीं चाहिए।

- **Nationalism Suppresses Cultural Diversity**

Tagore was against nationalism because it tried to make everyone in a country follow the same identity and culture. He believed that a nation is made up of different languages, traditions, and cultures. Nationalism, in his view, ignored this and forced people to adopt a single national identity.

राष्ट्रवाद सांस्कृतिक विविधता का दमन करता है

ठाकुर ने राष्ट्रवाद के खिलाफ आवाज उठाई क्योंकि यह देश के सभी लोगों को एक ही पहचान और संस्कृति अपनाने की कोशिश करता था। उनका मानना था कि एक राष्ट्र में विभिन्न भाषाएं, परंपराएं और संस्कृतियाँ होती हैं। राष्ट्रवाद इस विविधता को नजरअंदाज करता है और लोगों को एकल राष्ट्रीय पहचान अपनाने के लिए मजबूर करता है।

- **Tagore's Idea of Universalism**

Instead of nationalism, Tagore believed in universalism. He thought that people should identify as part of the entire human race, not just one nation. For him, the whole world should be treated as a family, and people should care about humanity as a whole, not just their own nation.

रवींद्रनाथ ठाकुर का सार्वभौमिकता का विचार

ठाकुर ने राष्ट्रवाद की जगह सार्वभौमिकता को अपनाया। उनका मानना था कि लोगों को सिर्फ अपने देश से नहीं, बल्कि पूरी मानवता का हिस्सा समझना चाहिए। उनके लिए, पूरी दुनिया को एक परिवार मानते हुए, सभी को मानवता के लिए काम करना चाहिए, न कि केवल अपने राष्ट्र के लिए।

- **Blind Patriotism in Nationalism**

Tagore warned against blindly following nationalism. He believed that extreme love for one's country could make people support harmful policies without thinking about their impact. Patriotism, for Tagore, should be based on reason and moral values, not blind loyalty.

Scholarly Minds

राष्ट्रवाद में अंधी देशभक्ति का खतरा

ठाकुर ने अंधी देशभक्ति के खिलाफ चेतावनी दी। उनका मानना था कि अपने देश से अत्यधिक प्रेम लोगों को बिना सोचे-समझे हानिकारक नीतियों का समर्थन करने के लिए प्रेरित कर सकता है। उनके लिए, देशभक्ति तर्क और नैतिक मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए, न कि अंधी निष्ठा पर।

- **Nationalism Can Harm Minorities**

Tagore also worried that nationalism could harm minorities. In colonial India, he was concerned that focusing too much on nationalism might push aside the rights and needs of smaller groups, especially those who were already oppressed or neglected. He wanted a society where everyone, no matter their background, could live in harmony.

राष्ट्रवाद अल्पसंख्यकों को नुकसान पहुंचा सकता है

ठाकुर को यह भी डर था कि राष्ट्रवाद अल्पसंख्यकों को नुकसान पहुंचा सकता है। उपनिवेशी भारत में, उनका मानना था कि अगर राष्ट्रवाद पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया जाता है, तो छोटे समूहों के अधिकार और आवश्यकताएं अनदेखी हो सकती हैं, खासकर जिने पहले ही दबाया गया था। वे एक ऐसी समाज की चाहत रखते थे जहाँ हर कोई, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, शांति से रह सके।

- **Nationalism as a Tool for Oppression**

Tagore believed that nationalism could replace one form of oppression with another. In India, he feared that when nationalism became too strong, it might lead to the dominance of one community over others, just like the British Empire did. He wanted people to focus on unity and love for all, not just loyalty to one's country.

राष्ट्रवाद उत्पीड़न का एक उपकरण बन सकता है

ठाकुर का मानना था कि राष्ट्रवाद एक प्रकार के उत्पीड़न को दूसरे से बदल सकता है। भारत में, उन्हें डर था कि जब राष्ट्रवाद बहुत मजबूत हो जाएगा, तो यह एक समुदाय को दूसरे पर हावी कर सकता है, जैसे ब्रिटिश साम्राज्य ने किया था। वे चाहते थे कि लोग एकता और सभी के लिए प्रेम पर ध्यान केंद्रित करें, न कि केवल अपने देश के प्रति निष्ठा पर।

In what ways religion influenced the polity in pre-modern India?

पूर्व-आधुनिक भारत में धर्म ने राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया?

1. Divine Kingship and Legitimacy of Rulers

Religion was often used to legitimize rulers. Kings were seen as divine or semi-divine figures, with their authority believed to be granted by the gods. This concept was central to Hindu monarchies, where rulers were considered protectors of cosmic order.

ईश्वरत्मक राजतंत्र और शासकों की वैधता

धर्म का उपयोग शासकों को वैध बनाने के लिए किया जाता था। राजाओं को दिव्य या अर्धदिव्य व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता था, और उनकी सत्ता को देवताओं द्वारा प्रदान किया गया माना जाता था। यह सिद्धांत हिंदू साम्राज्यों में केंद्रीय था, जहां शासकों को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रक्षक के रूप में माना जाता था।

- **Example:** Ashoka (Mauryan Empire) was considered a protector of *dharma* and was depicted as divinely chosen to rule justly and peacefully.

Scholarly Minds

उदाहरण: अशोक (मौर्य साम्राज्य) को *धर्म* का रक्षक माना गया और उन्हें न्यायपूर्ण और शांतिपूर्ण शासन करने के लिए दिव्य रूप से चुना हुआ माना गया था।

2. Religious Texts as Political Ideals

Religious scriptures like the *Manusmriti* and *Arthashastra* provided guidelines for governance. These texts addressed statecraft, justice, law, and social duties, which rulers often used to guide their policies.

धार्मिक ग्रंथों को राजनीतिक आदर्श के रूप में प्रयोग करना

धार्मिक ग्रंथ जैसे *मनुस्मृति* और *अर्थशास्त्र* शासन के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करते थे। ये ग्रंथ राज्य संचालन, न्याय, कानून, और सामाजिक कर्तव्यों पर चर्चा करते थे, जिन्हें शासक अपनी नीतियों को निर्देशित करने के लिए उपयोग करते थे।

- **Example:** The *Arthashastra* of Kautilya outlined the ideal behavior of kings, providing principles of governance and justice.

उदाहरण: कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* शासकों के आदर्श व्यवहार का वर्णन करता है, जो शासन और न्याय के सिद्धांत प्रदान करता है।

3. Religious Patronage and Support

Rulers often patronized religious institutions to gain support and strengthen their political power. By funding temples, religious rituals, and supporting monks, they garnered loyalty and stability from religious communities.

धार्मिक अनुग्रह और समर्थन

शासक धार्मिक संस्थाओं को समर्थन देने के लिए मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों, और संन्यासियों को वित्तीय सहायता प्रदान करते थे, ताकि वे धार्मिक समुदायों से वफादारी और स्थिरता प्राप्त कर सकें।

- **Example:** The Chola dynasty funded the construction of grand temples, such as the Brihadeeswarar Temple, strengthening both religious influence and political power.

उदाहरण: चोल वंश ने भव्य मंदिरों, जैसे कि बृहदीश्वर मंदिर, के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की, जिससे धार्मिक प्रभाव और राजनीतिक शक्ति दोनों को मजबूती मिली।

4. Religion and State Laws

Religion influenced laws in pre-modern India. In Hindu kingdoms, religious laws dictated social norms like caste and marriage. In Islamic kingdoms, Sharia laws influenced governance, affecting taxation and personal laws.

धर्म और राज्य के कानून

प्राचीन भारत में धर्म ने कानूनों को प्रभावित किया। हिंदू राज्यों में धार्मिक कानून जाति और विवाह जैसे सामाजिक मानदंडों को निर्धारित करते थे। इस्लामी राज्यों में, शरिया कानूनों ने शासन को प्रभावित किया, जो कराधान और व्यक्तिगत कानूनों पर असर डालते थे।

Scholarly Minds

- **Example:** The *Manusmriti* governed social norms, including the caste system, influencing political decisions in Hindu kingdoms.

उदाहरण: *मनुस्मृति* ने सामाजिक मानदंडों को शासित किया, जिसमें जाति व्यवस्था भी शामिल थी, और यह हिंदू राज्यों में राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करता था।

5. Religious Tolerance

Under rulers like Akbar, religion was used to create a syncretic culture that blended different religious practices, promoting tolerance and unity in a diverse polity.

धार्मिक सामंजस्यवाद

अकबर जैसे शासकों के तहत, धर्म का उपयोग एक सांस्कृतिक सामंजस्य बनाने के लिए किया गया, जो विभिन्न धार्मिक प्रथाओं को मिला कर विविध राज्य में सहिष्णुता और एकता को बढ़ावा देता था।

- **Example:** Akbar's policy of religious tolerance and promotion of Din-i Ilahi aimed to integrate Hindus and Muslims into a cohesive political entity.

उदाहरण: अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति और *दीन-ए-इलाही* का प्रचार हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने का प्रयास था, जिससे एक सामूहिक राजनीतिक इकाई बन सके।

णामस्वरूप 1947 में पाकिस्तान का निर्माण हुआ।

Scholarly Minds